# राहुल गांधी

## सामाजिक न्याय की राजनीति के नए मसीहा!

एच एल दुसाध

# राहुल गांधी

## सामाजिक न्याय की राजनीति के नए मसीहा

एच.एल. दुसाध

बहुजन डाइवर्सिटी मिशन

प्रथम संस्करण : 2023

प्रकाशक : **बहुजन डाइवर्सिटी मिशन**
B-1,149/9 किशन गढ़, वसंत कुंज
नई दिल्ली-110070, सम्पर्क : 011-26125973, 9654816191
E-mail : hl.dusadh@gmail.com

© **लेखक**

**मूल्य : 60.00 रुपये**

**रचना** : राहुल गांधी : सामाजिक न्याय की राजनीति के नए मसीहा
**लेखक** : एच. एल. दुसाध
**शब्दांकन** : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
**आवरण** : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
**मुद्रक** : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-110094

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| प्रस्तावना | 5 |
| लेखकीय | 9 |
| कैसे राहुल में दिखने लगेगी नेहरु की छवि! | 13 |
| 2014: मोदी की सुनामी बाद राजनीति के पंडितों की नज़रों में राहुल गाँधी! | 15 |
| क्या राहुल की जगह प्रियंका के होने से परिणाम भिन्न होता! | 19 |
| राजनीति के पंडितों की हैसियत : सतही रिपोर्टरों से ज्यादा नहीं! | 20 |
| 2009 में राजनीति के पंडितों ने राहुल गाँधी को दिया था : 2014 के नरेंद्र मोदी जैसा आदर! | 21 |
| लोकसभा चुनाव-2019 की बड़ी उपलब्धि : राहुल गांधी का एक परिपक्व नेता के रूप में उदय! | 26 |
| भारत जोड़ो यात्रा : गांधी की दांडी यात्रा के बाद सबसे महत्वपूर्ण पहल! | 33 |
| और राहुल बन गए सामाजिक न्याय की राजनीति का नया आइकॉन! | 35 |
| सामाजिक न्याय की अपनी खोई जमीन हासिल करने के लिए क्या करे कांग्रेस | 37 |
| शक्ति के स्रोतों के बंटवारे में प्राथमिकता देना होगा आधी आबादी को | 40 |
| किताब का निष्कर्ष! | 41 |
| राहुल गाँधी का परिचय | 43 |

# प्रस्तावना

राहुल गांधी की भूमिका, उनकी प्रतिबद्धता और उनकी राजनीतिक क्रियाशीलता को लेकर मेरे संपर्क के दो व्यक्तित्व पिछले एक दशक से अपने विचारों पर दृढ़ हैं— एक सीपीआई के महासचिव डी. राजा और दूसरा बहुजन डायवर्सिटी मिशन के प्रणेता एच.एल. दुसाध।

डी राजा अक्सर कहते रहे हैं कि 'राहुल गांधी कांग्रेस के पहले नेता हैं, जिन्हें कांग्रेस के सबसे खराब दिनों में उसका नेतृत्व करने की जिम्मेवारी मिली। राहुल गांधी एक ऐतिहासिक नियति में अपनी भूमिका के लिए स्थित हुए।'

कांग्रेस अपनी दशकों पुरानी राजनीति में ऐसी स्थिति में कभी नहीं थी, जैसी वह 2014 के बाद पहुँचती चली गयी। एच.एल. दुसाध राहुल को इन खराब दिनों में एक उम्मीद की तरह देखते हैं, कांग्रेस से अधिक देश के लिए। वे मानते हैं कि 'राहुल ट्रेजडी नायक' के रूप में दर्ज होने वाले नहीं।' उनके अनुसार सामाजिक न्याय के रास्ते वे भारतीय राजनीति के नायक सिद्ध होने वाले हैं।

पिछले दिनों, 27 जुलाई 2023 को, भारत में बहुजन डायवर्सिटी मिशन के प्रणेता एच.एल. दुसाध की लोकार्पित दो किताबें 'सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन, राहुल गांधी' और 'राहुल गांधी कल, आज और कल' किताबें एच.एल. दुसाध की ही निरंतरता में एक दृढ़ विचार को समझने की किताबें हैं कि आखिर कैसे एक 'दूरदर्शी राजनेता' को आरएसएस के काफी योजनाबद्ध तरीके से राजनीति के लिए अनुपयोगी सिद्ध करने की कोशिश के बावजूद सच्चाई इससे अलग है और समय के बुद्धिजीवी इसे समझ भी रहे हैं। लेकिन दुसाध जी यहीं कहाँ थमने वाले थे। वे राहुल गांधी के प्रति अपने विचार को आम जन तक इसलिए पहुंचाने की प्रतिबद्धता से प्रेरित हैं कि 2024 के चुनाव को वे भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक ऐसी रेखा की तरह देख रहे हैं, जिसके बाद लोकतंत्र और देश के सामाजिक न्याय की गति को अपने एक निर्णायक मोड़ पर पहुंच जाना है-या तो प्रतिक्रांति के मोड़ पर, या क्रांति की गतिकी की निरंतरता के एक मोड़ पर! इसी प्रतिबद्धता के तहत यह लघु पुस्तिका अब हमारे सामने है-'राहुल गांधी : सामाजिक न्याय की

राजनीति के नए मसीहा'—जो अपनी पृष्ठों और अपने मूल्य के कारण प्रसार की दृष्टि से अधिक संवहनीय है।

दुसाध जी प्रतिबद्धता और मिशन के धनी हैं। बहुजन डायवर्सिटी मिशन (बीडीएम) के जरिये वे हर वर्ष 'डायवर्सिटी डे' का आयोजन करते हैं, मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार द्वारा सप्लाई में डायवर्सिटी की एक कोशिश को चिह्नित करते हुए। बीडीएम हर वर्ष दर्ज करता है कि 27 अगस्त 2002 को, तत्कालीन मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने अपने राज्य के छात्रावासों और आश्रमों के लिए स्टेशनरी, बिजली का सामान, चादर, दरी, पलंग, टाट-पट्टी, खेलकूद का सामान इत्यादि का नौ लाख उन्नीस हज़ार का क्रय आदेश भोपाल और होशंगाबाद के एससी/एसटी के 34 उद्यमियों के मध्य वितरित कर भारत में 'सप्लायर डाइवर्सिटी' की शुरुआत की थी। राहुल गांधी में डायवर्सिटी के लिए वे एक उचित विजन और नेतृत्व देख रहे हैं।

यह लघु पुस्तिका 2009 से राहुल गांधी की भारतीय राजनीति में भूमिका और उन्हें लेकर मीडिया के लोकप्रिय लोगों की बदलती राय की समीक्षा करती हैं। 2014 के बाद ये राय राहुल गांधी के प्रति अधिक कटु और हमलावर होते गए, जबकि 2009 से इन्हीं लोगों की व्यक्त राय बताते हैं कि इन रायों में कोई स्थिरता नहीं है, सत्ता-सापेक्ष राय रखने वाले लोग राहुल गांधी की छवि आम मानस में ले जाएँ, यह भारतीय राजनीति के लिए बेहद खतरनाक रहा।' एच.एल. दुसाध इन बदलती रायों से अलग राहुल गांधी को 'दूरदर्शी' नेता मानते हैं और अब कांग्रेस के रायपुर कन्वेंशन के बाद उन्हें सामाजिक न्याय का नया मसीहा बता रहे हैं।

इस किताब के लेखन की मंशा ही है—राहुल गांधी के सामाजिक न्याय की भूमिका को अपना समर्थन देना, उसे बल देना ताकि कांग्रेस सहित राजनीतिक दलों को उद्धत हिंदुत्व के प्रभाव से मुक्त रखने का दवाब बने। एच.एल. दुसाध के अनुसार राहुल गांधी तो इससे मुक्त हैं ही। दरअसल कोई राजनेता अपने समर्थक समूहों की वैचारिकी से खाद पानी लेता है और उसके साथ देश को नेतृत्व देने में अपनी भूमिका को सहजता से सम्पादित कर पाता है। विरोधी विचारों के दवाब से निपटने में समर्थक समूहों की वैचारिकी बेहद महत्वपूर्ण होती है। भारत जैसे बहुस्तरीय देश में, जहाँ समाज आज भी प्रगतिशीलता के प्रति, बदलावों के प्रति उतना अनुकूल नहीं है, एक प्रगतिशील राजनीति के लिए, राजनेता के लिए, इन समर्थक दवाब समूहों की बेहद बड़ी भूमिका होती है। इस लिहाज से एच.एल. दुसाध जैसे बदलाव के चिंतकों की भूमिका महत्पूर्ण हो जाती है। इसे इतिहास के आईने में कुछ यूं समझा जा सकता है : जवाहर लाल नेहरू को अपने समय की प्रतिगामी विचारधारा से लड़ने में मजबूती कांग्रेस के भीतर के समाजवादी नेताओं और विचारों से मिलती थी, अपनी शर्तों के साथ कभी संवाद और कभी संघर्ष करने वाले बाबा साहेब डाक्टर अम्बेडकर से मिलती थी। जैसे-जैसे कांग्रेस से समाजवादी बाहर हुए और बाबा साहेब अम्बेडकर

हिन्दू कोड बिल के सवाल पर राजनीति की सक्रियता से सीमित हुए, प्रतिगामी राजनीतिक धारा नेहरू के सामने दवाब की राजनीति खड़ी करने में अपनी सक्रियता बढ़ाती गयी।

राजनीति में समर्थक समूहों और विरोधी समूहों की वैचारिकी के बीच एक नेता, एक प्रणेता काम करता है। पक्ष और विपक्ष दोनों यदि प्रगतिशील हों, अलग-अलग रास्तों से बदलाव का वाहक हों, तो नेता दोनों से खाद-पानी लेता है।

मैं राहुल गांधी की भारत यात्रा में ऐसे दो अलग-अलग प्रकार के दवाब समूहों का उल्लेख करना चाहूंगा। कांग्रेस के ही एक नेता शहनवाज आलम के अनुसार राहुल गांधी को महाराष्ट्र और कर्नाटक में अलग अनुभव हुए। उन्हें वहां कोई मंदिर-मस्जिद जाने को नहीं कह रहा था। कार्यकर्ता उन्हें अन्ना भाऊ साठे, फुले, अम्बेडकर जैसे पुरोगामी/ प्रगतिशील शख्शियत के स्मारक स्थल पर चलने को कहते। इसके पहले जबकि कर्नाटक में उन्हें मंदिर चलने का आग्रह किया जाता।

इन दो दृष्टांतों की पृष्ठभूमि से भी दुसाध जी जैसे बहुजन बुद्धिजीवियों का समर्थन और दवाब महत्वपूर्ण है। राहुल गांधी से एच.एल. दुसाध जैसे बहुजन बुद्धिजीवियों की उम्मीदें कांग्रेस की राजनीति में क्या असर डालेंगी यह वक्त बताएगा! दुसाध जी भारत जोड़ो यात्रा को बेहद उम्मीद की दृष्टि से मूल्यांकित कर रहे हैं। वे इस यात्रा को दांडी यात्रा की तरह ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण मान रहे हैं। भारत जोड़ो यात्रा और कांग्रेस का रायपुर कन्वेंशन इस किताब के लिए दो प्रस्थान बिंदु हैं।

इन पंक्तियों के इस लेखक ने पिछले डेढ़ दशक से राहुल गांधी की वर्धा, यवतमाल यात्राओं को देखने, कवर करने और उसके इम्पैक्ट को समझने का काम किया है। आलोचनात्मक दृष्टि से रिपोर्ट किया है, लिखा है। आगे भी राहुल गांधी को कांग्रेस के बेहद खराब दिनों में संघर्ष करते हुए देखा है। दुसाध जी की किताबों ने इस लेखक को भी नए सिरे से राहुल गांधी को समझने की वजह दी है। कांग्रेस हमेशा से विविध विचारों का समुच्चय रहा है। राहुल गांधी के समक्ष चुनौतियाँ वही हैं, जो जवाहर लाल नेहरू के समक्ष थीं। देश को प्रगतिशील विचारों और समावेशी समाज की ओर ले जाने की चुनौतियों का वे बाहर-भीतर से मुकाबला कर रहे थे और राहुल गांधी के सामने भी वे चुनौतियाँ अभी शेष हैं। उन्हें विक्टिमाइज किया जाता रहा है, यह सच है। आरएसएस के बेहद लम्बे अभियान में यह उन्हें विक्टिमाइज किये जाने की प्रक्रिया शामिल है। लेकिन जनता विक्टिमहुड को वोट नहीं करती। राहुल गांधी को विक्टिम से अधिक नेता की तरह नेतृत्व करना है। उन्हें प्रताड़ित जनता को प्रताड़ना मुक्ति का स्वप्न देना है, उसपर काम करना है।

यह किताब अपनी संवहनीयता की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है और राहुल गांधी के प्रति अपनी प्रस्तावना की दृष्टि से भी कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सारी

कोशिशों और संसाधनों के बावजूद राहुल गांधी को पप्पू साबित करना मुश्किल रहा।

एक विशेष विश्लेषण पर इस किताब के लेखक और इन पंक्तियों के लेखक की खास सहमति है, हम कई बार बात भी करते रहे हैं कि राहुल गाँधी पीढ़ी-दर पीढ़ी धर्म और जाति की विविधता वाले अपने परिवार के कारण एक निर्जात व्यक्तित्व हैं-जाति और धर्म की सकीर्णताओं और स्वार्थों से मुक्त। यह भारतीय राजनीति के लिए सुखद अवसर की तरह है। इस विश्लेषण में मैं अपनी बात और जोड़ता रहा हूँ कि राहुल गाँधी को अपनी ऐतिहासिक भूमिका के प्रति और अधिक सजग, और अधिक न्यायपूर्ण और अधिक आत्म-आलोचनात्मक होना चाहिए। अंत में मैं वर्तमान हालात में अपनी ओर से कांग्रेस ही नहीं : पूरे 'इंडिया' गठबंधन को सुझाव देना चाहूंगा कि वह किताब में दिये गये इस निष्कर्ष पर गंभीरता से विचार करें—'मंडल के खिलाफ उभरे मंदिर आन्दोलन के जरिये नफरत की राजनीति को तुंग पर पहुंचा कर अप्रतिरोध्य बनी भाजपा के नरेंद्र मोदी ने जिस तरह वर्ग संघर्ष का इकतरफा खेल खेलते हुए राजसत्ता का इस्तेमाल हजारों साल के जन्मजात सुविधाभोगी के हित में किया है, वह नई सदी में वर्ग संघर्ष के इतिहास की अनोखी घटना है। इसी सुविधाभोगी वर्ग के हित में उन्होंने जिस तरह विनिवेश नीति को हथियार बनाकर सरकारी संस्थाओं एवं परिसंपत्तियों को निजी हाथों बेचा है; इसी वर्ग के हित में जिस तरह संविधान को व्यर्थ करने के साथ बहुजनों के आरक्षण को कागजों की शोभा बनाया है; इसी वर्ग के हित में जिस तरह संविधान की अनदेखि करते हुए आनन-फानन में ईडब्ल्यूएस के नाम पर सवर्णों को आरक्षण सुलभ कराने के साथ जिस तरह लैटरल इंट्री के जरिये अपात्र सवर्णों को आईएएस जैसे उच्च पदों पर बिठाने का प्रावधान रचा है, उससे यह मानकर चलना चाहिए कि सवर्ण आगामी 25 वर्षों तक अपना वोट भाजपा को छोड़कर अन्य किसी भी दल को, किसी भी सूरत में नहीं देने जा रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस को सवर्णों के वोट से मोहमुक्त होने की मानसिकता विकसित करनी चाहिए।

संघ के असंख्य संगठनों, साधु-संतों, मीडिया एवं धन्ना सेठों के समर्थन से दुनिया की सबसे शक्तिशाली पार्टी बनी भाजपा को हराने जैसा आसान कोई पॉलिटिकल टास्क नहीं कोई, बशर्ते विपक्ष उसे चुनावों में सामाजिक न्याय की पिच पर खेलने के लिए बाध्य करने के साथ ही मोदी की नीतियों से उभरे सापेक्षिक वंचना (Relative Deprivation) के हालात का खुलकर सद्व्यवहार करे! ऐसे में कांग्रेस यदि 2024 में भाजपा को सामाजिक न्याय के पिच पर खिलाने का सफल उपक्रम कर सके तो भाजपा की विदाई और इंडिया की सत्ता में वापसी तय है।'

**—संजीव चंदन**